एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 06 (नवंबर-दिसंबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आम की वैज्ञानिक खेती

(श्रीमति मधुलता भास्कर[1] एवं *डॉ. सुभाष वर्मा[2])
[1]तकनीकी सहायक, आखिल भारतीय आलू समन्वित अनुसंधान परियोजना, कृषि अनुसंधान संस्थान, उम्मेदगंज, कोटा, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान
[2]सहायक प्रोफेसर, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, मध्य प्रदेश
*संवादी लेखक का ईमेल पता: subhashverma0052@gmail.com

आम (*Mangifera indica*) को "फलों का राजा" कहा जाता है। यह न केवल स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है, बल्कि भारत में बागवानी की रीढ़ भी है। भारत आम का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। आम की वैज्ञानिक खेती से उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार कर किसानों की आय बढ़ाई जा सकती है।

आम की खेती के लिए जलवायु और मृदा आवश्यकताएँ

1. जलवायु:
- आम उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में उगाया जाता है।
- तापमान: 24°C से 30°C।
- आम के पौधों को फूलने और फलने के लिए सर्दियों में हल्की ठंड और गर्मियों में गर्म तापमान चाहिए।

2. मृदा:
- आम की खेती के लिए गहरी, उपजाऊ, और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी आवश्यक है।
- मृदा का pH 5.5 से 7.5 तक होना चाहिए।

आम की प्रमुख किस्में: भारत में आम की कई लोकप्रिय किस्में हैं, जो जलवायु और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार उगाई जाती हैं।

1. आल्फांसो (हापुस):
- महाराष्ट्र में प्रसिद्ध।
- मिठास और स्वाद के लिए प्रसिद्ध।

2. दशहरी:
- उत्तर प्रदेश और बिहार में प्रचलित।
- मध्यम आकार और रसदार।

3. लंगड़ा:
- उत्तर भारत में प्रमुख।
- खट्टा-मीठा स्वाद।

4. तोतापुरी:
- दक्षिण भारत में व्यावसायिक रूप से उगाया जाता है।
- प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त।

5. केसर:

- गुजरात की प्रसिद्ध किस्म।
- मिठास और रंग के लिए प्रसिद्ध।

आम की बागवानी के चरण

1. भूमि की तैयारी:
- गहरी जुताई और खरपतवार की सफाई करें।
- जैविक खाद और गोबर खाद डालकर मिट्टी को उपजाऊ बनाएं।

2. गड्ढे की खुदाई और रोपण:
- गड्ढे का आकार: 1x1x1 मीटर।
- प्रत्येक गड्ढे में गोबर खाद, नीम खली, और टॉपसॉयल का मिश्रण डालें।
- पौधारोपण का सही समय: मानसून की शुरुआत।

3. पौधों की दूरी:
- पौधों के बीच 10x10 मीटर की दूरी रखें।
- अधिक घनत्व वाली खेती में दूरी 5x5 मीटर हो सकती है।

सिंचाई और उर्वरक प्रबंधन

1. सिंचाई प्रबंधन:
- पहले 2-3 वर्षों तक नियमित सिंचाई करें।
- फल लगने के दौरान सिंचाई कम करें।
- ड्रिप सिंचाई पद्धति अपनाएँ।

2. उर्वरकों का उपयोग:
- पहले वर्ष में 10-15 किग्रा गोबर खाद प्रति पौधा।
- नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का संतुलित अनुपात।
- जैव उर्वरकों का उपयोग उत्पादन गुणवत्ता बढ़ाने के लिए करें।

आम की देखभाल और प्रबंधन

1. कटाई-छंटाई:
- मृत और रोगग्रस्त शाखाओं को हटा दें।
- छंटाई का सही समय: बरसात के बाद।

2. फूलों और फलों की देखभाल:
- फूलों के समय सिंचाई बंद कर दें।
- फलों को टूटने से बचाने के लिए पौधों का सहारा दें।

3. मल्चिंग:
- मिट्टी की नमी बनाए रखने और खरपतवार नियंत्रण के लिए पौधों के चारों ओर मल्चिंग करें।
- आम के प्रमुख कीट और रोग

कीट प्रबंधन:

मैंगो हॉपर्स:

नियंत्रण: नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव।

फलों की मक्खी:

नियंत्रण: फेरोमोन ट्रैप्स का उपयोग।

रोग प्रबंधन:

पाउडरी मिल्ड्यू: सल्फर आधारित फफूंदनाशकों का छिड़काव।

एन्थ्राक्नोज:कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का उपयोग।

फलों की कटाई और प्रसंस्करण

1. कटाई:
- फल पकने पर गहरे हरे से हल्का पीला रंग हो जाता है।
- हाथ से सावधानीपूर्वक तोड़ाई करें।

2. भंडारण और पैकेजिंग:
- फलों को ग्रेडिंग और पैकेजिंग के बाद कोल्ड स्टोरेज में रखें।
- 13-15°C तापमान पर फलों को 2-3 सप्ताह तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

3. प्रसंस्करण:
- आम से जूस, अचार, पल्प, और कैंडी जैसे उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं।

आधुनिक तकनीकों का उपयोग

1. ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग: जल प्रबंधन और खरपतवार नियंत्रण में सहायक।
2. ड्रोन तकनीक: खेत की निगरानी और कीटनाशक छिड़काव।
3. जैव प्रौद्योगिकी: अधिक उत्पादन और रोग प्रतिरोधी किस्मों का विकास।

निष्कर्ष

आम की वैज्ञानिक खेती किसानों के लिए एक लाभकारी व्यवसाय है। उन्नत तकनीकों और प्रबंधन पद्धतियों को अपनाकर आम की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। यदि किसान जलवायु, मृदा और आधुनिक खेती के तरीकों का सही उपयोग करें, तो आम की खेती से अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।